GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2016/62096
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN
2229-3620

64

PIS

शोध संचार
बुलेटिन

An International
Multidisciplinary
Quarterly Bilingual
Peer Reviewed
Refereed
Research Journal

Vol. 11
Issue 41
January to March 2021

Editor In Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1	छत्तीसगढ़ राज्य के अनुसूचित जनजातियों मे साक्षरता	डॉ0 महिमाती सालेन टोप्पो	1
2	आधुनिक भारत मे ग्रामीण समाज की यात्रा एवं सामाजिक परिवर्तन समाजशास्त्रीय पाठ	डॉ0 विमल कुमार लहरी	6
3	भारतीय समाज, संस्कृति एव पर्यावरण संरक्षण में डॉ0 राधाकमल मुकर्जी का सामाजिक पारिस्थिति की परिप्रेक्ष्य	डॉ0 कविता कन्नौजिया	11
4	अटल आवास योजना का हितग्राहियों के आर्थिक एव सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ के राजनांदगॉव जिलें के विशेष संदर्भ में)	रागिनी डॉ0 टाण्डेकर के. एल. डॉ0 भाटिया एच. एस.	15
5	विश्व शांति के सन्दर्भ मे जैन दर्शन का अनेकान्तवाद	श्वेता जैन डॉ0 अनीता सोनी	20
6	कोरोना काल में मानसिक स्वास्थ्य एवं एकाग्रता पर योग का प्रभाव	डॉ0 अनीता सोनी सपना नरूका	24
7.	राष्ट्र के शैक्षिक व सामाजिक विकास में महात्मा ज्योतिबा फुले जी के चिन्तन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ0 सुरेश कुमार	28
8.	कहानी का नाट्यरूपान्तरण : एक सामान्य परिचय	राखी क्लेमन्ट	33
9.	अनकही अंभिव्यक्तियों का दस्तावेज : लोक साहित्य	अन्तिमा चौधरी	37
10.	वागड़ी बोलने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिखित हिन्दी में व्याकरणिक एवं संप्रेषणीय दक्षता के स्तर का अध्ययन	डॉ0 प्रियंका रावल	40
11.	छत्तीसगढ की उरॉव जनजाति–एक अध्ययन	डॉ0 पुष्पराज लाजरस शेख तस्लीम अहमद	45
12.	मुहरों पर गजलक्ष्मी का मूर्तिविधान	डॉ0 अर्चना मिश्रा	48
13.	पं. वालकृष्ण भट्ट का कृतित्व तथा उनकी हिंदी सेवा	डॉ0 अपराजिता जॉय नंदी	52
14.	हाई स्कूल स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन	डॉ0 संगीता सराफ मोनिका चौबे	55
15.	पर्यावरण नैतिकता एवं अभिवृत्ति पर पर्यावरणीय जागरूकता का प्रभाव : उत्तराखण्ड के निवासियों के संदर्भ में	डॉ0 मानवेन्द्र सिंह सेंगर	59

16	[illegible] इंदौर शहर एक [illegible]	श्रीमती [illegible]	64
17	राष्ट्रभाषा हिन्दी के [illegible]	डॉ0 [illegible]	[illegible]
18	आजादी के बाद विकास और विषमता का एक [illegible] के संदर्भ में	[illegible]	73
19	[illegible] ग्रामीण विकास एवं योजनाएँ भारत के सन्दर्भ में	सुशील कुमार [illegible]	76
20	मध्य प्रदेश राज्य में ग्रामीण कौशल केंद्रों की रोजगार सृजन में भूमिका : इंदौर शहर के संदर्भ में ग्रामीण कौशल केंद्रों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	[illegible] कुमारी	80
21	कबीर के 'सबद' में व्यक्त भाषा–शैली	डॉ0 नागेश नाथ दास	85
22	पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन में हिन्दी साहित्य का योगदान	डॉ0 नेहा अरोरा कपूर	89
23	संयुक्त राष्ट्र संघ की पुनर्संरचना एवं भारत	डॉ0 प्रीतमराज	93
24	बिहार में रोजगार के अवसर : प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत एक अध्ययन।	राकेश कुमार	97
25	योगाभ्यास का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ0 रामा यादव प्रियंका कुमारी	102
26	जयपुर : ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल	डॉ0 सुमित मेहता	107
27	राजस्थान के परम्परागत जल स्त्रोत	डॉ0 अमित मेहता	111
28	छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक दुश्चिंता पर प्रभाव का अध्ययन	चंकी राज वर्मा डॉ0 (श्रीमति) संगीता शराफ	115
29	कक्षा 7 वीं के अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पालक – बालक संबंध का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन	प्रो. (डॉ.) परविन्दर हंसपाल डॉ. (श्रीमति) संगीता शराफ श्रीमती रीता चौबे	121
30.	भारत में जनजातीय चेतना : उद्भव एवं एतिहासिक परिप्रेक्ष्य	डॉ0 धीरज कुमार चौधरी सुरेश कुमार	126
31.	नारायणपुर जिले में अबुझमाड़िया जनजाति विद्यार्थियों के आर्थिक व पारिवारिक स्थिति का अध्ययन	श्रीमती लता कुर्रे डॉ0 बसंत नाग किरण नुरूटी	130

32	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के निबन्ध	डॉ0 दुर्गेश कुमार राय	135
33	साहित्यिक कृतियों का अनुवाद कार्य के संदर्भ में	प्रो0 शेख इस्माईल शेख हुसैन	139
34	पुरुष जागरूकता एवं महिला सशक्तिकरण	विजय कुमार शुक्ल	143
35	महिला उत्पीड़न : कानूनी प्रावधान एवं न्यायालय की भूमिका	अनिता सोनी	147
36	लोक संगीत में रामकथा	डॉ0 इच्छा नागर	151
37	सआदत हसन मण्टो और भीष्म साहनी की कहानी कला : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ0 कैलाश पंवार	155
38	विद्यार्थियों के विकास में माता–पिता की सहभागिता–एक अध्ययन	डॉ0 नलिनी मिश्रा अनुपम जायसवाल	159
39	सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	डॉ0 प्रमिला नागवंशी	164
40	'तमस' उपन्यास की साम्प्रदायिक समस्या	डॉ0 सुमन कुमारी	170
41	हंसराज रहबर की दृष्टि में प्रेमचन्द का उपन्यास–साहित्य	किरन सिंह	173
42	निराला के काव्य में माननीय मूल्य	डॉ0 इन्दु कनौजिया	178
43	महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन	पुष्पा यादव	182
44	अखिलेश की कहानियों में हाशिये का विमर्श	डॉ0 पूनम यादव	186
45.	वेदकालीन नारी–शक्ति का स्वरूप एवं उसके राजनैतिक एवं प्रशासनिक योगदान की प्रासंगिकता (वर्तमान के आलोक में)	डॉ0 (श्रीमती) वसुधा श्री	190
46	चन्द्रकांता एक मूल्यांकन	डॉ0 डॉली पाण्डेय	195
47.	वैदिक मन्त्र जीवनोपयोगी शिक्षक एवं कर्त्तव्य बोधक	डॉ० पल्लवी सिंह	198
48	भारत में महामारियों का इतिहास एवं उनका प्रतिरोध	श्री रविन्द्र कुमार	201
49.	छत्तीसगढ़ राज्य में कृषि क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं फसल प्रतिरूप में परिवर्तन : एक विश्लेषण (जॉजगीर–चाम्पा जिले के विशेष संदर्भ में)	कु. सुमन लता राठौर डॉ0 महेश श्रीवास्तव	204
50.	ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति एवं अस्मिता बाराबंकी के गांव कोला गहबड़ी का एक समाजशास्त्री अध्ययन	श्वेता साहू	210

51	ग्रामीण विकास में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम के योगदान से संबंधित आकारणात्मक एवं सैद्धांतिक विकास	डॉ० रीना गुप्ता उत्पल मिश्रा	215
52	चन्देल मूर्तिशिल्प का कलात्मक विकास	डॉ० अनीता कनौजिया	220
53	कांकेर जिला (छ.ग.) के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मस्तिष्क गोलार्द्ध प्रभुत्व का उनके अधिगम शैली पर प्रभाव	डॉ० प्रज्ञा झा आस्था शर्मा	223
54	ग्रामीण परिवारों के सामाजिक विकास में संचार माध्यम : लखीमपुर तहसील के विशेष संदर्भ में	वृजेन्द्र कुमार वर्मा डॉ० महेन्द्र कुमार पाढ़ी	227
55	विचित्र नाटक : वर्णन कौशल	डॉ० ज्योति कौर	231
56	फैजाबाद में आजादी की अलख जगाने वाले वीर क्रान्तिकारी मौलवी अहमदउल्ला शाह	रुपा श्रीवास्तव डॉ० पूनम चौधरी	236
57	तसव्वुफ / सूफिज्म	डॉ० समीना अफ़ज़ाल	239
58	डॉक्टर रमन सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ० सुभाष चंद्राकर भारती चंद्राकर	244

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
शोध संचार बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 159-163
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

विद्यार्थियों के विकास में माता-पिता की सहभागिता-एक अध्ययन

डॉ० नलिनी मिश्रा*
अनुपम श्रीवास्तव**

शोध सारांश

माता–पिता, अभिभावक या परिवार के अन्य सभी सदस्य पारिवारिक प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक होते है। वह बच्चे के जन्म से ही उसके विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनकर उसे सामाजिक प्राणी बनाने के लिए तत्पर रहते हैं और प्रत्येक समय देखभाल, समर्थन, सहायता, प्रेरणा, सहयोग आदि के द्वारा विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक विकास में अपनी भूमिका का निर्वाहन करते हैं ताकि जीवन की प्रत्येक स्थिति मे विद्यार्थी स्वयं को समायोजित कर सके। अभिभावकों की इस सक्रिय सहभागिता से विद्यार्थी में विश्लेषण क्षमता, निर्णयन क्षमता, तथा आत्म विश्वास में वृद्धि होती है, जिसके कारण वह अपने अनुभव को उपयोग कर आत्म सम्प्रत्ययों का निर्माण करता है। परिस्थितियों के अनुसार उसकी आत्म संकल्पनाएं, विचारों कोउत्पन्न करके, उसकी निर्णयन क्षमता को सुदृढ़ बनाती है। इसी निर्णयन क्षमता के कारण कार्य कुशलता, नियोजन क्षमता तथा कार्य प्रबन्धन आदि गुणों के समावेश से विद्यार्थी तनाव रहित रहकर भावी जीवन से समन्वय स्थापित करता है।

Keywords : सहभागिता, आत्म सम्प्रत्यय, निर्णयन क्षमता, समायोजन, शैक्षिक क्रियाकलाप

प्रस्तावना

जीवन के सुचारू रूप से चलने के लिए सन्तुलन की व्यवस्था एक अत्यन्तआवश्यक तत्त्व है। सन्तुलन से तात्पर्य विभिन्न आवश्यकताओं, उपयोगिताओं, कठिनाइयों, परिस्थितियों, लाभ–हानि, ऊँच–नीच आदि के मध्य उचित तारतम्य की व्यवस्था करनाहै ताकि बिना विचलित हुए समय की मांग के अनुरूप परिस्थितियों को इस प्रकार ढाल लिया जाए कि राह भी आसान हो जाए और थकान की अनुभूति भी न हो। समयानुकूल उचित समन्वय स्थापित करने की योग्यता एवं कुशलता तभी सम्भव है जब व्यक्तित्व में सामन्जस्य स्थापित करने की क्षमता, सकारात्मक दृष्टिकोण, व्यवहारिक चेतना, तनाव रहित कार्य कुशलता, सामाजिक आत्म–सम्प्रत्ययका विकास आदि गुणों का समावेश हो।

व्यक्तित्व के इन व्यवहारिक गुणों के विकास के लिए शिक्षा का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, दार्शनिक, तकनीकी, सांस्कृतिक, नैतिक होनें के साथ–साथ व्यवहारिक होना अत्यन्त आवश्यक है। आधुनिकता की दौड़ में शिक्षा शैक्षिक सिद्धान्तों से आगे निकलकर कम्प्यूटर नेटवर्किंग के सन्जाल में फँसकर जितना डिजिटल होती जा रही है उतना ही व्यवहारिकता से दूर होती जा रही है। कोई भ्रम नहीं कि हम शैक्षिक प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं परन्तु प्रगति की ओर बढ़ते–बढ़ते वास्तविकता और व्यवहारिकता का पतन होता जा रहा है, सच्चाई के धरातल की समस्याएँ अत्यन्त जटिल होती जा रही हैं। कल्पनाओं की अन्धी होड़ और चरम आर्थिक चेतना नें व्यक्ति के व्यवहारिक और सामाजिक मूल्यों को सबसे पीछे लाकर खड़ा कर दिया है, व्यवहारिक और मानवीय मूल्यों को छोड़कर, लोग कल्पनाओं के सागर में गोते लगाकर झूठे दिखावे की ओर लगातार बढ़ने की होड़ मचाए हुए हैं।समाज के तमाम व्यावहारिक मूल्यों की अनदेखी का दुष्प्रभाव नवीन पीढ़ी के विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। वह सदैव एक तनाव में रहते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए कौन से कदम उठाने होंगे? कैसी परिस्थितियों का सामना करना होगा? विभिन्न शैक्षिक पाठ्यक्रमों में किसका चुनाव बेहतर होगा? आर्थिक होड़ में कहीं हम पिछड़ तो नहीं जायेंगे? आदि सवाल विद्यार्थियों को व्यथित करते हैं, जिनके कारण परिस्थितियों के अनुसार उनकी समन्वय की क्षमता प्रभावित होती है फलस्वरूप वह समस्त जनों से असन्तुष्ट होकर सांवेगिक असन्तुलन के शिकार हो जाते हैं।

आधुनिक 'सोशल नेटवर्किंग समाज' में सम्पूर्ण शिक्षा का स्वरूप भी व्यवसायिकता की बाढ़ में बह रहा है; जिससे सैकड़ों प्रकार के पाठ्यक्रमों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिनमें आपसी समन्वय का अभाव है, साथ ही साथ व्यवसायिक संस्थाओं

---

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर – शिक्षा विभाग, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ०प्र०
**शोधार्थी – शिक्षा विभाग, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ०प्र०

के प्रलोभन पूर्ण प्रस्ताव, शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। इन असमानताओं के चलते विद्यार्थी मानसिक तनाव से ग्रस्त हो रहे हैं, उनकी समन्जन क्षमता का ह्रास हो रहा है तथा किसी पाठ्यक्रम, व्यवसाय आदि के सम्बन्ध में उन्हें अपने सम्प्रत्यय बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

इन सभी असन्तुलित वातावरणीय परिस्थितियों के चलते विद्यार्थियों के विकास और शैक्षिक उन्नयन के लिये अन्य सम्बन्धियों जैसे माता–पिता, अभिभावक, भाई–बहन आदि की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता होती है, जो विद्यार्थियों को जीवन के समस्त पहलुओं से तालमेल बिठाने में सदैव तत्पर रहते हैं और उचित निर्देशन द्वारा उनका पथ–प्रदर्शन करते रहते हैं ताकि विद्यार्थी पूर्ण आत्मविश्वास से समस्त शैक्षिक क्रियाकलापों में सहभाग करते हुए उचित सामन्जस्य स्थापित कर सके। माता–पिता की विद्यार्थियो के शैक्षिक जीवन में सहभागिता तथा विद्यार्थियो की विभिन्न क्षेत्रो से तालमेल बिठाने की क्षमता में समानुपाती सम्बन्ध होता है। ये सहभागिता जितनी सकारात्मक होगी विद्यार्थियों का विकास उतना ही सकारात्मक होगा अर्थात् उन विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता अधिक होती है जिनके माता–पिता की शैक्षिक सहभागिता अधिक होती है। इसके न होने पर कुसमायोजन, मानसिक असन्तुलन, सांवेगिक दुष्प्रभाव आदि लक्षण परिलक्षित होते हैं।

प्रायः निजी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, उनकी व्यवहारिक क्षमता, सृजनशीलता, प्रस्तुतीकरण की क्षमता आदि गुणस्तरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर होते हैं क्योंकि निजी विद्यार्थियों के अभिभावक अपने विद्यार्थियों के शैक्षिक क्रिया–कलापों में सक्रियता से सहभाग करके उनके व्यक्तित्व के विकास में सहयोग प्रदान करते हैं। प्रतियोगिताओं के आधुनिक दौर में विद्यार्थियों में उच्च सांवेगिक सन्तुलन, तारतम्य की क्षमता, तनाव मुक्त प्रवन्धन क्षमता, और उन्नत स्तरीय सम्प्रत्ययों के निर्माणीकरण क्षमता के विकास के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यार्थियों के माता–पिता सभी शैक्षिक क्रियाकलापों में अपने वच्चोंके साथ सहभाग करते रहें।

वैश्वीकरण के युग में कोई राष्ट्र अपने नागरिकों के सर्वांगीण विकास किए विना आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि शिक्षा वह महत्त्वपूर्ण संसाधन है जो भविष्य निर्माण में महती भूमिका निभाती है तथा असख्य लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है। इन्हीं उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए ही शिक्षा का सार्वभौमीकरण करने का प्रयास किया गया है, जिससे समस्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वगुण सम्पन्नता का समावेश किया जा सके। व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए एक ढर्रे पर चलने वाली विकासात्मक प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता है जो कि माता–पिता की सक्रिय सहभागिता से ही सम्भव है।

माता–पिता की सहभागिता

विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों में अभिभावकों, माता-पिता, अन्य अनुभवी पारिवारिक सदस्यों द्वारा अनौपचारिक या औपचारिक रूप से विद्यार्थियों को निर्देशन, प्रस्ताव, सुझाव, समाधान, सहायता, मार्गदर्शन, सहयोग आदि के माध्यम से निरन्तर पथ प्रदर्शन किया जाना सहभागिता कहलाता है। यह सहभागिता माता–पिता द्वारा, अभिभावकों द्वारा, पारिवारिक सदस्यों द्वारा, मित्रों द्वारा, समुदाय द्वारा,यथा विद्यालय द्वारा, अभिभावक संघआदि के माध्यमों से विभिन्न रूपों में परिलक्षित हो सकती है। अभिभावकों या माता–पिता की सहभागिता, व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त करती है तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व व्यवहारिक ज्ञान को सुदृढ करते हुए जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को उन्नत करती है। विद्यार्थियों के जीवन में जब–जब भी विकल्पों के चयन किये जाने में विभ्रम की स्थिति होती है, तब–तब सहभागी अभिभावक चयनात्मक भूमिका के रूप में सहायता करने के लिए न केवल उपलब्ध होते हैं वल्कि विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति में भी उचित संसाधनों को सुलभ करवाने में योगदान देते हैं। विद्यार्थियों के लिए समस्त शैक्षणिक अधिगम प्रक्रियाओं में अभिभावकों द्वारा सहभागिता की जा सकती है। माता–पिता की सहभागिता प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म विश्वास को सबल बनाती है, उनकी जिज्ञासाओं की तुष्टि करती है, उनकी चिन्तन शक्तियों को जागृत करती है, उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता को उन्नत करती है। इन्हीं मानसिक क्षमताओं के कारण विद्यार्थियों में किसी वस्तु, व्यक्ति, विषय–वस्तु या विचार के प्रति सम्प्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया सम्पादित होती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

एक विद्यार्थी जब संसार में जन्म लेता है तो सर्वप्रथम अपने माता–पिता के सम्पर्क में आता है उसके बाद परिवार के सम्पर्क में तथा धीरे–धीरे समाज के सम्पर्क में आता है। विद्यार्थी धीरे–धीरे अपने परिवार व अन्य समाज के सदस्यों से सामाजिक रहन–सहन, तौर–तरीके, आपसी सम्बन्ध आदि सामाजिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से सीखता है। परिवार व समाज के सभी लोग विद्यार्थी के प्रति अपनी–अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं ताकि विद्यार्थी का उचित विकास हो सके। विद्यार्थी के परिवेश के समस्त सदस्य अपनी भागीदारी से एक ऐसा आधारभूत ढाँचा निर्मित करते हैं ताकि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके। व्यक्तित्व निर्माण की इस प्रक्रिया में परिस्थितियों को समझाने, आत्म विश्वास को बढ़ाने, प्रेरणा देने, प्रतिपल समर्थन करने का कार्य परिवार के सभी सदस्यों द्वारा नित–प्रतिदिन किया जाता है जिसके कारण विद्यार्थी तमाम शैक्षिक गतिविधियों से समायोजित होकर सभी के साथ समन्वय स्थापित करना सीखता है।

अभिभावकों द्वारा घरेलू सहभागिता के साथ–साथ

स्तरीय सहभागिता, शैक्षिक सहभागिता, सामाजिक ...ता तथा शिक्षक अभिभावक संघ के माध्यम से व्यक्तित्व ... की समस्त गतिविधियों में निरन्तर प्रतिभाग करके एक ...वरण निर्मित किया जाता है जो विद्यार्थी को जीवन के ... से धैर्य पूर्वक जूझने की क्षमता प्रदान करता है। जीवन ... की प्रक्रिया मे दुर्भाग्यवश जिन विद्यार्थियों को यह प्रतिभाग ... नहीं हो पाता वो संसार की बहुआयामी परिस्थितियों में ... नही हो पाते और कुण्ठा, हीनता तथा मानसिक ... का शिकार हो जाते हैं। कुसमंजन की इस स्थिति में ... का सामाजिक, शैक्षिक, मानसिक और सांवेगिक विकास ... जाता है। अतएव व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में परिवार, ...कों तथा माता–पिता की सहभागिता अत्यन्त आवश्यक है।

कोविड–19 की भयावह परिस्थितियों में समस्त शैक्षिक ... पूरी तरह बन्द होने के कारण विद्यार्थियों का औपचारिक ... गतिविधियों से सम्पर्क पूरी तरह से टूट चुका है। ऐसी ... में परिवार और अभिभावकों की विद्यार्थियों को औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार से प्रेरित करने की भूमिका और ... बढ़ गयी है। इन अचानक उत्पन्न हुई परिस्थिति में समस्त ... घरेलू सहभाग की ही हो गयी है। विद्यार्थियों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों की शैक्षिक क्रियाकलापों में यदि अभिभावकों की सक्रियता न हुई तो विद्यार्थियों का विकास अवरुद्ध हो सकता है। संक्रामक रोग के ...र के कारण विद्यार्थियों का सम्पर्क पूरी दुनिया से पूरी तरह से टूट गया है। खेल आदि से सम्पर्क न होने के कारण विद्यार्थियों में तनाव बढ़ रहा है। ऐसी विशेष परिस्थिति में परिवार को मित्रतापूर्ण वातावरण का सृजन घर में ही करना पड़ रहा है। तनाव प्रबन्धन न हो पाने से विद्यार्थियों में सामन्जस्य की क्षमता कम होती जा रही है। विद्यालय, खेल–कूद आदि से दूरी तथा घर में पूरी तरह से बन्द रहने के कारण नवीन ज्ञान से प्रत्यक्ष सम्पर्क लगभग समाप्त हो गया है। फलतः अभिभावकों तथा परिवार का उत्तरदायित्व, पूर्ण सहभागिता की भूमिका और भी अधिक हो चली है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, तनाव एवं आत्म–सम्प्रत्यय का उनके माता–पिता की सहभागिता के सन्दर्भ में अध्ययन"** विषय के लिए सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अन्तर्गत विभिन्न शोधों तथा उनसे प्राप्त निष्कर्षो का अध्ययन किया गया, जिससे समय अन्तराल, सम्बन्धन आदि प्राप्त हुए, उनमें से कुछ का विवरण अग्रलिखित है–

बबिता अरोड़ा (फरवरी 2016) ने अपने शोध पत्र ISSN : 2321–3361 में **"कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता के किशोरों के समायोजन और उनके माता–पिता की सहभागिता के मध्य सम्बन्ध"** विषयपर अध्ययन किया व निम्नलिखित निष्कर्ष दिये–

1. कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता की सहभागिता और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।
2. कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता की सहभागिता और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।
3. कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता की सहभागिता और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।
4. कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता की सहभागिता और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।

उपरोक्त अध्ययन में समायोजन के विभिन्न आयामों के साथ सम्पूर्ण सहभागिता के सम्बन्धों पर कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है, इस अध्ययन में सहभागिता के आयामों विद्यालय स्तरीय, गृह स्तरीय और शिक्षक अभिभावक संघ स्तरीय सहभागिता को भी जोड़ा जा सकता है।

डॉ० जय प्रकाश एवं डॉ० सुषमा रानी (अप्रैल 2016) ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र **Current Innovation Research (ISSN:2395–5775)** में **"प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में माता–पिता की सहभागिता"** पर अध्ययन किया और निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त किए–

1. सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके माता–पिता की सहभागिता में सार्थक सम्बन्ध हैं।
2. सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक अन्तर है।
3. सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों के माता–पिता की सहभागिता में सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त अध्ययन में सम्पूर्ण सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धियों के सम्बन्धों पर सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है, सहभागिता की विशिष्ट भूमिका के अध्ययन हेतु इस अध्ययन में एक ही संस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर अध्ययन किया जा सकता है।

सुनीता बिष्ट एवं मन्जू गेरा (फरवरी 2015) ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र **ISSN : 2349 –7955** में **"अधिगम अक्षमता युक्त विद्यार्थियों के समायोजन में माता–पिता की**

सहभागिता" विषय पर अध्ययन किया व निम्नलिखित निष्कर्ष दिये–

1 माता–पिता की विद्यालयी सहभागिता और विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

2. माता–पिता की घरेलू सहभागिता और विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।

3 माता–पिता की शिक्षक–अभिभावक संघ के माध्यम से सहभागिता और विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

4 माता–पिता की घरेलू सहभागिता और विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक सम्बन्ध है।

माता–पिता की सहभागिता, विद्यार्थियों के समायोजन के साथ सम्बन्धित होने के साथ–साथ उनके तनाव और आत्म सम्प्रत्यय से भी सह सम्बन्धित है अतः तनाव और आत्म सम्प्रत्यय का भी चर के रूप में अध्ययन किया जा सकता है।

लोकेश शर्मा (2010) ने "व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के समायोजन, आत्म–सम्प्रत्यय सामाजिक व्यवहार एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" पर शोधकार्य करके कानून और शिक्षा के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय, समायोजन और मूल्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए विभिन्न निष्कर्ष प्राप्त किए-

1. कानून के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन की मात्रा शिक्षा के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है जबकि शिक्षा के विद्यार्थियों में सांवेगिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन तथाकुल समायोजन की मात्रा कानून के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।
2. शिक्षा के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म–सम्प्रत्यय, मनोभावात्मक आत्म–सम्प्रत्यय, नैतिक आत्म–सम्प्रत्यय, बौद्धिक आत्म–सम्प्रत्यय तथा कुल आत्म–सम्प्रत्यय कानून के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर का है।
3. शिक्षा के विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य व सामाजिक मूल्यों का स्तर कानून के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि कानून के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य व धार्मिक मूल्यों का स्तर शिक्षा के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।
4. शिक्षा के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म–सम्प्रत्यय, मनोभावात्मक आत्म–सम्प्रत्यय, नैतिक आत्म–सम्प्रत्यय, बौद्धिक आत्म–सम्प्रत्यय तथा कुल आत्म–सम्प्रत्यय कानून के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर का है।
5. शिक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन के मान में परिवर्तन का उनके आत्म–सम्प्रत्यय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जबकि कानून के विद्यार्थियों केआत्म–सम्प्रत्यय के मान में परिवर्तन का उनके सामाजिक व्यवहार, पर नकारात्मक रूप से अल्प प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त शोध में कानून और शिक्षा के विद्यार्थियों का समायोजन, आत्म सम्प्रत्यय और मूल्यों के सन्दर्भ में विस्तृत अध्ययन किया गया है, इसी के अनुसार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, आत्म सम्प्रत्यय और तनाव पर सहभागिता के सन्दर्भ में विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

अखण्ड प्रताप सिंह (2006) ने अपने शोध "शहरी और ग्रामीण स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, तथा आत्म सम्प्रत्यय के सन्दर्भ में उनकी समायोजन समस्याओं के सन्दर्भ में अध्ययन" किया और कला और विज्ञान के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों पर संपादन के फलस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त किए–

1. शहरी वालिकाओं का आत्म–सम्प्रत्यय विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर है।
2. शहरी विद्यार्थियों का आत्म–सम्प्रत्यय ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर है।
3. ग्रामीण वालकों का आत्म–सम्प्रत्यय ग्रामीण बालिकाओं की तुलना में बेहतर है।
4. शहरी बालकों का आत्म–सम्प्रत्यय शहरी बालिकाओं से बेहतर है।
5. शहरी बालिकाओं का समायोजन शहरी बालकों से बेहतर है।
6. शहरी बालकों का समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर है।
7. शहरी बालिकाओं का समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर है।
8. ग्रामीण बालकों का समायोजन ग्रामीण बालिकाओं से बेहतर है।

उपरोक्त अध्ययन में आत्म सम्प्रत्य और समायोजन चरों के सन्दर्भ में अलग अलग स्तर के विद्यार्थी बालिकाओं की तुलना करने का प्रयास किया गया है चूँकि विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय निर्माण से ही जीवन में उनका समायोजन निर्धारित होता है। अतः इन दोनों चरों के आपसी एवं सहभागिता के सन्दर्भ में सम्बन्धों पर अध्ययन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

बुशरा मुस्तफा (2004) ने अपने शोध "विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन और समायोजन पर शैक्षिक तनाव के प्रभाव का मूल्यांकन" में विद्यार्थी और बालिकाओं पर किए गए अपने अध्ययन में पाया कि–

1. शैक्षिक तनाव तथा शैक्षिक निष्पादन के मध्य सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ अर्थात शैक्षिक तनाव का शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव अप्राप्त है।
2. शैक्षिक तनाव का गृह समायोजन से कोई सम्बन्ध नहीं है।
3. शैक्षिक तनाव का स्वास्थ्य, संवेगात्मक और सामाजिक समायोजन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

शैक्षिक समायोजन के सभी आयामों का कोई भी प्रभाव समायोजन के सभी आयामों पर प्राप्त नहीं हुआ।

इस प्रायोगिक अध्ययन मे शैक्षिक तनाव को स्वतन्त्र चर [लेक]र उसके समायोजन पर प्रभाव का विस्तृत अध्ययन करते [हु]ए निष्कर्ष प्राप्त किए गए है चूंकि ये दोनो चर विद्यार्थियो के [मात]ा–पिता की सहभागिता से भी सम्बन्धित है अत: इन दोनों चरों [का] अध्ययन सहभागिता के सम्बन्ध मे किया जाना प्रासंगिक [है]।

माता–पिता की सहभागिता के सम्बन्ध में उपरोक्त अध्ययन [के] अतिरिक्त कुछ अन्य निष्कर्ष भी विचारणीय हैं–

- हार्ट और रिस्ले (1999) के विचारानुसार माता–पिता तीन साल के बच्चे के साथ अन्तःक्रिया में जितना अधिक समय देंगे बच्चे की कुशाग्रता उतनी ही प्रबल होगी।
- अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, यूनेस्को के अनुसार अभिभावक और विद्यार्थी के मध्य भाषायी रूप से समृद्ध और भावात्मक सम्बन्ध, अधिगम में सहायक होते हैं तथा माता–पिता का प्रेरणा दाई समर्थन विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर बेहतर निष्पादन के लिए प्रेरित करता है।
- अमेरिकी शिक्षा विभाग (2002) ने सहभागिता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि इससे विद्यार्थियों का व्यवहार बेहतर होता है और ये विद्यालय स्तर पर उपस्थिति को बनाये रखने में सहायक है।
- अभिभावकों की सहभागिता के सम्बन्ध में कोलमैन रिपोर्ट (1960) में, अमेरिका में 1900 प्राथमिक विद्यालयों में सर्वेक्षण किया गया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि बच्चों की उपलब्धियों में सबसे अहम भूमिका परिवार की है। सर्वेक्षण में ये पाया गया कि उन बच्चों की तुलनात्मक स्थिति बेहतर थी जिनके माता–पिता बच्चों के साथ विद्यालय के अतिरिक्त भी शिक्षण में प्रतिभाग करते थे।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और कार्य योजना (1992) में अभिभावक–अध्यापक भागीदारी को बल देते हुए विद्यार्थी के विद्यालय को उसके घर से जोड़े रखने की बात कही है।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार सभी विद्यालयों में विद्यालय प्रबन्ध समिति का गठन अनिवार्य कर दिया गया है; जिसमें विद्यालय के बच्चों के अभिभावकों का 75 प्रतिशत प्रतिनिधित्व, विद्यालय प्रबन्ध समिति में अवश्य होना चाहिए ताकि विद्यालय गतिविधियों में अभिभावकों और समुदाय के प्रतिभाग को सक्रिय बनाया जा सके।

उपरोक्त समस्त अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक सभी गुणों का अध्ययन करते समय, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय "माता–पिता की सहभागिता" की भूमिका का विशिष्ट एवं व्यापक अध्ययन किया जाना चाहिए क्योंकि व्यक्तित्व के सभी गुणों की निर्भरता किसी न किसी रूप में माता–पिता की सहभागिता पर ही है। सर्वांगीण विकास का कोई भी ऐसा लक्षण नहीं है जो अभिभावकों की सहभागिता के समग्र रूप से प्रभावित नहीं होता। सहभागिता के इसी समग्र रूप का विस्तृत अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा समायोजन, आत्म–सम्प्रत्यय और तनाव का अध्ययन सहभागिता के सन्दर्भ में करने का प्रयास किया जा रहा है।

सन्दर्भ :–

1. अरोड़ा, बबिता, (2016), कामकाजी और गैर कामकाजी माता–पिता के किशोरों के समायोजन और उनके माता–पिता की सहभागिता के मध्य सम्बन्ध।
2. प्रकाश, जय एवं सुषमा रानी, (2016), प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में माता–पिता की सहभागिता।
3. बिष्ट, सुनीता एवं मन्जू गेरा, (2015), अधिगम अक्षमता युक्त विद्यार्थियों के समायोजन में माता–पिता की सहभागिता।
4. शर्मा, लोकेश, (2010), व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के समायोजन, आत्म–सम्प्रत्यय सामाजिक व्यवहार एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सिंह, अखण्ड प्रताप, (2006), शहरी और ग्रामीण स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, तथा आत्म सम्प्रत्यय के सन्दर्भ में उनकी समायोजन समस्याओं का अध्ययन।
6. मुस्तफा, बुशरा, (2004), विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन और समायोजन पर शैक्षिक तनाव के प्रभाव का मूल्यांकन।
7. श्रीवास्तव, अनुपम (2003), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता तथा समायोजन का उनके माता–पिता के प्रत्यक्षीकृत व्यवहार के साथ सम्बन्ध–एक अध्ययन पीएचडी, लखनऊ विश्वविद्यालय।
8. शर्मा, निधि, (2002), 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता की सहभागिता और आकांक्षा का प्रभाव।
9. चक्रबर्ती, सोनाली, (2003), शहरी विद्यालयों की उपलब्धि के सम्बन्ध में माता–पिता की सहभागिता और घर के वातावरण का अध्ययन।